सीता पुनि बोली : मानवी बन कर

डॉ ममता शर्मा

पद –सहायक आचार्य (हिंदी),

एस. बी. के. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय जैसलमेर, राजस्थान

समीक्षा - सीता पुनि बोली

लेखिका- मृदुला सिन्हा

प्रकाशन- विद्या विहार ,नई दिल्ली

सीता पुनि बोली प्रसिद्ध कथाकार मृदुला सिन्हा का आत्म कथात्मक उपन्यास है, जिसमें जनकपुर के विदेह राजा जनक की दुलारी ,राम की सहधर्मिणी ,दशरथ –कौशल्या की अत्यंत प्रिय पुत्र वधू ,लक्ष्मण ,भरत,शत्रुघ्न की सहृदय भाभी राजमहल से लेकर वन और आश्रम जीवन में अनेक सामाजिक संबंधों में बँधी सीता के जगज्जननी सीता से सामान्य मानवी सीता के स्वरुप को आत्म कथानक शैली में लिख कर लेखिका ने एक ओर जहाँ भारतीय परम्परा के उज्ज्वल पाँच नारी चरित्रों (सीता,मंदोदरी ,अहील्या,तारा,द्रौपदी)को पुरातन संदर्भों में व्यक्त करने की अखंड श्रृंखला का पालन किया है वहीं देवी स्वरूपा सीता को सामान्य जन मानस के चेतस की सीता के रूप में व्यक्त कर आधुनिक संदर्भों में नारी के स्वरुप को उद्भासित करने की सार्थकता सिद्ध की है ।

उपन्यास के पूर्वोक्त में सीता स्वयं घोषणा करती हैं कि-

“मैं पृथ्वी पुत्री सीता इन दोनों पुत्रों की जननी हूँ । इक्ष्वाकु वंश की ये दोनों संतानें उनके प्रतापी वंश को अर्पित कर मैनें अपना दायित्व पूर्ण किया । असंख्य संतानों की माँ,धरती की अंश ,अब मैं अपनी मान के सानिध्य में जाना चाहती हूँ| चलत -चलते बहुत थक चुकी हूँ, मानों शक्ति क्षीण हो गई है । पुन: शक्ति के लिए धरती ही उपयुक्त स्त्रोत है । मैं कुश और लव की जननी, अपनी जननी का आलिंगन करना चाहती हूँ ,उसके सत में विलीन हो जाना चाहती हूँ ।”

प्रकारांतर में महा ग्रंथों में रचे सीता का चित्रण महाशक्ति ,जज्जनानी और देवी स्वरूपा के रूप में करके उन्हें मानवीय गुण-दोषों से परे कर दिया गया किन्तु सीता पुनि बोली उपन्यास जो की क्रमश: मिथिलोत्सव,अवधोत्सव,वनोत्सव ,लंकोत्सव, राज्योत्सव,आश्रमोत्सव,मातृउत्सव एवं महाप्रयाण शीर्षकों से ८ खण्डों में एवं ३० प्रकरणों में विभक्त है । इनमें लेखिका ने सीता के अंतर्मन में लाखों नर नारियों को प्रविष्ट करा कर , सीता के आत्म को सनातन समाज का आत्म सत्य बना कर वर्तमान संदर्भों में स्त्री

के शक्ति सामर्थ्य को ढूंढने, पुन: व्याख्यित करने का सफल प्रयत्न किया गया है । विषम परिस्थितियों को अपने संकल्प ,आत्मीय शक्ति से सम और सुखकारी बनाने का जो सामर्थ्य नारी शक्ति में है वही पुरुष जीवन की मंगलमय स्थिति का नियामक एवं विधायक है। यह उपन्यास स्त्री जीवन संघर्ष एवं उसकी अस्मिताके दर्शन का कारुणिक एवं हृदयस्पर्शी कथ्य है। आज के संदर्भों में सीता चरित्र को पठनीय ,दर्शनीय एवं माननीय बनाने के लिए आत्म कथात्मक शैली की उपयुक्तता भी स्वयं सिद्ध होती है ।

जैसा की संशय की एक रात के राम डॉ भारत अ.पटेल ने लिखा है की पौराणिक राम कथा को हर युग अपनि दृष्टि से दोहराता है ।इसके दो कारण हैं -१-राम कथा प्रत्येक भारत वासी के रगों में बहती है ।२-कोई भी कवि या लेखक अपनी युगीन समस्याओं को राम कथा के माध्यम से प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने की आकांशा रखते हैं ।

सीता पुनि बोली कृति में उक्त दोनों कारण स्वत; सिद्ध होते हैं ।लेखिका सीता के व्यक्तिव्त का विराट लेखन करने में सफल होती है ।इस कृति के उत्सव मानव जीवन के उत्सव बन पड़े हैं ।

सीता का बचपन पितोंमुख रहा किन्तु एक दिन मर्मभेदी रुदन के दौरान भूमिजा संज्ञा पाई वहीँ बाल मन वैदेही नाम पाकर पुन;गदगद हो उठी ।यहीं मिथिलोत्सव १ पूर्ण होता है।

जनक वंशी राजा निमी की धरोहर शिव धनुष को सहेजने ,मिटटी को छूने,माँ को स्पर्श करने एवं आम बेर्र ,बेर के साथ वन भोज करते हुए जानकी के प्राकृत धरती प्रेम से परिपूर्ण बचपन की कथा कहता है मितिलोत्सव २।

नारी जीवन के नैसर्गिक परिवर्तनों के प्रति किशोरी सीता को परिचय करवाता मिथिलोत्सव भाग ३ सीता द्वारा सौभाग्यशालिनी स्त्रियों की कथाएं सुनाने के साथ पूर्ण होता है।

अपने जनक जननी द्वारा जानकी के शस्त्र शक्ति संपन्न होने के उपरान्त भी स्त्री को युद्ध में प्रविष्ट होने की अनुमति नहीं देने से सीता के मन पर स्त्री पुरुष के तुलनात्मक बोध की पीड़ा उभर आती है। साथ ही मिथिलोत्सव भाग ४ में पुरुष के लिए स्त्री का अमूल्य धरोहर होना सीता द्वारा तापस वेश धारी राजकुमार का सपना एवं शिव धनुष की अचलता का प्राण मुख्य कथ्य के रूप में वर्णित है।

हर पुरुष में शिवत्व होता है और हर स्त्री सहचर ढूंढती है ।मितिलोत्सव ५ के इस लेखकीय कथन के साथ ही पिता जनक द्वारा योग्य वर हेतु शिव धनुष पर प्रत्यंचा का प्रण कर स्वयमवर की रचना करने पर सीता द्वारा स्वप्निल राजकुमार सदृश्य श्री राम के रूप गुण ,कुल का वर्णन सुन मुग्ध हो जाने की कथा है मिथिलोत्सव भाग ५ में ।

मिथिलोत्सव भाग ६ में सूर्योदय पूर्व पीत वस्त्र धारिता जानकी द्वारा गिरिजा भवानी की पूजा के पूर्व-पश्चात की मनोदशा का वर्णन है जहाँ बाग़ में श्री राम की वाणी,रूप छवि देख कर वैदेही विदेह सी हो जाती है ।इस भाग का शब्द विधान सामान्य स्त्री चेतस के भाव की अभिव्यंजना करता है ।

जलाशय में छवि देखती सीता को एकांत में लज्जाशीलता मातृ आसक्ति,नेत्र में राम की छवि ,मनोकामना पूर्ण होने की कामना ,पिता के प्राण पर क्षुब्धता तथा आशंका का भाव और इसी बीच शिव धनुष भंग की ध्वनि ,जय माला डाल मिथिलेश्वरी से राम की सहचरी होने की कथा है मिथिलोत्सव ७ नामक इस उत्सव में ।

मिथिलोत्सव के अंतिम ८ वें भाग में स्वयंवर पश्चात् बरात आगमन मंगल गीत ,विदाई वर्णन के साथ साथ सीता के अंतर्मन की गाँठ –'पृथ्वी की कोख से उपज' का एक बार फिर से स्मरण हो आना,माँ द्वारा दूसरी भूमिका की सीख देने के साथ साथ लेखिका ने एक नवीन उद्भावना का समावेश किया है ,जिसमें परशुराम द्वारा विष्णु धनुष से श्री राम की पुन:परिक्षा लेना दिखलाया गया है।

लेखिका आलोच्य उपन्यास के अवाधोत्सव में सामान्य मानवीय भाव संपृक्त वर्णन करते हुए नव वधू सीता के उल्लास का विविधता पूर्ण वर्णन कराती है । जिसमें सीता का गृह प्रवेश,स्वागत , सरोवर में एक दूसरे के लिए संकल्प,माँ कौशल्या द्वारा दो आँख होने का रहस्य समझाना इत्यादि दाम्पत्य सुख तथा प्रथम गृह प्रवेश की कथा समेटे ये अंक १ पूर्ण होता है ।

अवधोत्सव २ में पत्निव्रता पुरुष और पतिव्रता नारी सबंधी प्रश्न,दशरथ के तीन विवाह सबंधी प्रश्न एवं पाम के एकनिष्ठ होने के संकल्प का विवेचन कर लेखिका ने पति-पत्नी के दृढ संबंधों की प्रासंगिकता को सिद्ध किया है वहीँ सीता का सामान्य नारी की तरह पीहर जाने का अनुरोध सहज मानवीय उत्कंठा का लेखन है।

अवधोत्सव ३ में बाल्यकाल की टीस लिए सीता जब श्वसुर से वैदेही –पृथ्वी पुत्री होने की प्रशंसा सुनती है तो उसकी सोच सकारात्मक धरातल पर आरूढ़ हो जाती है और प्रकृति की सहोदरा होने का विराट भाव उल्लास में बदल जाता है।वृक्षों,नदियों,मिट्टीके माध्यम से वैदेही नाम की सार्थकता का अहसास करती करती हुई "मुझे भी दूसरों के लिए जीना है" का संकल्प लेती है। पुनश्च लेखिका माँ की सीख याद दिला कर –"मर्यादा और सील तुम्हारे कवच होंगे"(पृष्ठ ७५) नारी को वृक्ष,नदी,रत्न के सामान बनाने का संकल्प दिला कर संसार के सर्वोच्च स्थान पर सिंहासनारूढ़ करने का सार्थक प्रयास करती है ।राम के राज्यारोहन से पूर्व पति एवं प्रजापति के धर्म का विवेचन करती सीता अपने पत्नीधर्म को प्रजा दृष्टि के कल्पना लोक में विचारती है । सीता की इसी मन:स्थिति का वर्णन है इस अंक में।

मर्यादा एवं सुखी दाम्पत्य जीवन की सीख देती कौशल्या एवं राज महीषी सीता को श्री राम के चौदह वर्ष के वनवास की सूचना मिलाने पर मृदुला जी सीता को सप्तपदी का संकल्प याद दिला कर नारी गौरव की बात कहती है ।यहाँ वे पूर्व में स्थापित नारी योग्यता की चुनौती को अस्वीकार करती है ।युगबोध की बात स्वयं सीता से कहलवाने में निपुण है लेखिका –'देवर जी ,सदियों से नारी को दुर्बल और अक्षम समझ कर ही कुछ पुरुष उसे निर्बल बनाने की भूल करते रहे हैं (पृष्ठ ८५)' और सदैव साहचर्य को स्वीकारते हुए कहती हैं की 'विरह की अग्नि से पराक्रम का पराभव हो जाता है ।मैं उनके पुरुषार्थ में

बाधक नहीं बनूँगी' ये कहलवा कर स्त्री सामर्थ्य को युगीन संदर्भ में सफलता के साथ स्थापित करने का संकल्प है अवधोत्सव ४ ।

लेखिका वनोत्सव १ में वन प्रस्थान के समय मानवीय मनोवृत्ति ,तापस धर्म की पालना का संकल्प ,मानवीय आसक्ति भाव बोध की व्यंजना के साथ ही नारी शक्ति के बखान के साथ साथ राम का वन गमन, निषादराज गुह से मिलन,सीता के प्रकृति साहचर्य प्रेम की उदात्त व्यंजना तथा श्री राम-सीता जी का समवेत ब्रह्मचर्य पालन की प्रतिज्ञा लेना, साथ ही लेखिका का गंगा के माध्यम से ये कहलवाना कि –'पुरुष को संबल की अधिक आवश्यकता होती है'(पृष्ठ ८७)नारी शक्ति के दिग्दर्शन का विरला प्रयास है जो इन्हें स्त्री विमर्श के करीब ले आता है। गंगा –यमुना वर्णन,केवट द्वारा अहल्या प्रसंग,भारद्वाज ऋषि आश्रम वर्णन ,स्वयं भोजन पकाना तथा लक्ष्मण की तपस्या का वर्णन स्तुत्य स्वगत कथनों से किया ।

वनोत्सव २ में लेखिका ने चित्रकूट की तपोभूमि के प्रकृति चित्रण एवं अनुसूया के प्रबल तेज ,अत्री ऋषि के आश्रम एवं जनकपुरी की चित्रकारी कला का भी वर्णन किया है ।भरत मिलन ,अयोध्या एवं जनकपुरी वासियों का अनुराग , तीनों माताओं के श्वेत वस्त्रों को इंगित कर मातृत्व के पुरुषार्थ का मार्मिक विवेचन,भरत का राम से वापिस चलने का हाठ,कौशल्या की जनक से माफ़ी जैसी नवीन उद्भावना इस अंक में हुई है।

वनोत्सव ३ में लेखिका ने अयोध्या वासियों एवं जनकपुर वासियों के प्रस्थान पश्चात परिजनों के प्रति विविध भाव व्यंजनाओं एवं लक्ष्मण की मन:स्थिति को शब्द देते हुए 'जननी जन्मभूमि तथा आत्मीय भाव बोध की व्यंजना कर चित्रकूट को अयोध्या और जनकपुरी से भी श्रेष्ठ बताया है ।

त्रिकालदर्शी अनुसूया ने राम की मर्यादा पुरुषोत्तम छवि के मूल में त्रिगुणा सीता को ही बता कर सीता के चरित्र को महीमा मंडित किया है।लेखिका ने सीता से एक विशिष्ठ बात 'मेरी माँ कहती थीं "क्रोध में भी अपने बच्चों को कभी चोर,उचक्का,शैतान,झूठा आदि विशेषणों से संबोधित नहीं करना चाहीए जब माँ ने ही वैसा मान लिया तो बच्चे साधू,सदाचारी,सत्यवादी बनाने का प्रयास क्यों करें"(पृष्ठ १२६) कहलवा कर बाल मनोविज्ञान की शिक्षा दे डाली ।वहीँ पार्वती को व्यवहार कुशला बता कर गृहस्थ जीवन में शिव की बजाय पार्वती पूजा के विधान का उल्लेख कर नारी शक्ति स्वरुप को ही रेखांकित किया है।

वनोत्सव ४ में गृद्ध कूट पर्वत निवासी दशरथ मित्र जटायु के इस कथन –"दुःख की बात यह है कि यह स्थान भी अब शांत और निरापद नहीं रहा है ,यहाँ नारियां सुरक्षित नहीं है "(पृष्ठ १२७) के माध्यम से लेखिका ने वर्त्तमान संदर्भ में महीला सुरक्षा की चिंता का समावेश किया है।

कुटिया निर्माण को लेकर के सीता जी का यह कथन –"पूर्व पश्चिम अधिक होने से उसे सूर्यमंडल भूमि कहते हैं ,वह घर वास के लिए उचित नहीं होती"(पृष्ठ १२८) उनके वास्तु ज्ञान का रहस्योद्घाटन करता

है। वहीँ वनवासियों द्वारा पूर्व आच्छादित छत लाकर वनवासियों के आपदा प्रबंधन नियोजन का भान कराया है।

"दाम्पत्य का साध्य और साधन दोनों ही संतति उत्पन्न करना है ---प्रिय आखिर हम हैं तो मनुष्य ही न (पृष्ठ १३०) " सीता जी का उक्त कथन उसे मानवीय सीता बना देता है। सीता द्वारा गोदावरी नदी को दीदी कह कर संबोधित करना प्रकृति से आत्मीय भाव का बोध कराता है।जो कि वर्तमान ग्लोबल वार्मिंग के समय प्रकृति से मानव साहचर्य को अपरिहार्य बनाती है ।साथ ही लेखिका की पर्यावारानीय चिंतन दृष्टि को रेखांकित करती है ।इसी भाग में सूर्पनखा का संवाद वर्तमान नारी चरित्र की कतिपय वीभत्स विसंगति का दर्शन कराती है।वहीँ सीता का स्वर्ण मृग पर मोहीत हो पाने का हठ करना सामान्य नारी ले लक्षण भरना मात्र लगा। राम का दीन स्वर सामान्य जन का स्वर है ।

लेखिका द्वारा लंकोत्सव में सीता के पश्चाताप की तुलना केकई के पश्चाताप से करते हुए ये सन्देश देना कि "पश्चाताप में आत्मबल कमजोर होता है" सीता द्वारा पार्वती से सत के रक्षा की प्रार्थना करना ,सदा सुहागन का आशीष घोष सुनना ,भक्ति मार्ग पर विनम्रता प्रथम सोपान है तथा विश्वास से ही आत्म बल प्रबल होता है ।सीता से यह कहलवा कर लेखिका ने जीवन मूल्यों को दृढ़ता प्रदान की है ।लेखिका ने लंकोत्सव के चारों भागों में क्रमश:सीता पश्चाताप ,रावन द्वारा राक्षस विवाह प्रस्ताव ,हनुमान का वाटिका में प्रवेश त्रिजटा और लैला का नैतिक उत्थान ,सीता का सम मनस्क रहना आर्य अनार्य संस्कृति का वैशिष्ट्य उदघाटन ,विभीषण निष्काशन ,मंदोदरी-सीता संवाद का वर्णन प्रथम २ भागों में होता है।

लंकोत्सव के तीसरे भाग में बल पराक्रम पूर्ण युद्धों का वर्णन मिलता है ,जिसे जन समर्थन की आवश्यकता की बात ,रावन का आत्मबल हीन हो जाना ,सीता हरण पुरुषार्थ नहीं कामांध वासना थी ,सीता राम द्वारा शक्ति आराधना जो कि निराला की राम की शक्ति पूजा से --------,सुषेणवैद्य को राम के खेमे में बता कर नवीन उद्भावना का संचार , राम द्वारा सीता को आर्य संस्कृति की प्रतीक मानना ,यथा राजा तथा प्रजा का सन्देश एवं वानर सेना की अराजकता का वर्णन इस अंक का मुख्य कथ्य है।

सीता के दुःख को पृथ्वी का दुःख बता कर लेखिका ने युद्धरत जीवन को दुःख की पराकाष्ठा कहा है ।युद्ध क्षेत्र में शत्रु जितना बलशाली हो उतना ही आनंद आता है कह कर पुरुषार्थ को श्रेष्ठ बताया गया है।वहीँ मातंगी से नीति की यह बात कहलवाना की अहंकार एवं स्त्री अपमान नाश का कारण होता है अनार्य संस्कृति की स्त्रियों को नीतिज्ञ ठहराना है ।

स्वर्णमयी लंका का शिथिल होना ,अट्टहास करते रावन द्वारा सीता को मारने का प्रयास ,मंदोदरी द्वारा रक्षा साथ ही स्त्री मानव श्रृंखला का निर्माण कर लेखिका ने युगीन स्त्री चेतना का दिग्दर्शन कराया है। युद्ध में साध्य की पवित्रता के साथ साथ साधन की पवित्रता भी आवश्यक है और यदि साध्य स्त्री अस्मिता की रक्षा हो तो वह और भी विराट हो जाता है यह दर्शाना ,राम का रावन वध और लोक कल्याण राज्य की घोषणा के साथ ही लंकोत्सव पूर्णता को प्राप्त करता है।

राज्योत्सव के तीनों भागों में लेखिका ने स्त्री के अस्तित्व और अस्मिता को खोजने एवं स्त्री के सामर्थ्य को श्रेष्ठ सिद्ध करने का सफल प्रयास किया है ।

सीता जी के जीवन का बंधन मुक्ति उत्सव ,सीता का नारी सुलभ भावनाओं में बह कर श्रृंगार करना पुनश्च तापस वेश सृन्गारिक वेश पर द्वंद्व में पड जाना और कहना-"मुझे ऐसा श्रृंगार नहीं करना चाहीए ---- राम भी पुरुष है न ,कहीं उन्हें मुझ पर संदेह न हो "(१८७)ये संकेत देता है कि नारी को सदैव अपने साथ होने वाले अनिष्ठ का पूर्वाभास हो जाता है ,उसकी छठी इन्द्रि सदैव सक्रीय रहती है ।

पुन: मिलन के समय जयमाला से राम की भिन्न दृष्टि देख सीता का विचलित,सशंकित होकर यह कहना –"मुझे जीतने के लिए राम को बड़ी परीक्षाएं देनी पड़ीं थी ,शिव धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना ,जगत में प्रख्यात होना था---पुन: रावन का वध करने से उनकी ख्याति में चार चाँद लग गए हैं ,मानों राम की साध्य ही मैं थी किन्तु मुझे प्राप्त करते हुए राम स्वयं उंचाई प्राप्त करते गए "(१८१) फिर ये भिन्न दृष्टि कैसी| सहसा राम के मुख से यह कथन –"लक्ष्मण अग्नि की व्यवस्था करो,सीता की अग्नि परिक्षा ली जाएगी"(१८१) लेखिका की नवीन उद्भावना मात्र नहीं अपितु पुरुष प्रधान समाज की नारी के प्रति दृष्टि की परिक्षा थी ।

"क्यों चालू अग्नि पर ? अमिन नहीं दूंगी अग्नि परिक्षा ।मै राम के बिना लंका में अकेली रही तो राम भी तो मेरे बिना अकेले रहे ।फिर मेरी ही क्यों होगी अग्नि परिक्षा? क्या मात्र इसलिए कि मैं स्त्री हूँ?" (१९०) इनमें सदियों से अपमान का दंश झेल रही आधुनिक नारी का विद्रोही स्वर मुखरित हुआ है । अग्नि परिक्षा के प्रश्न पर झुंझलाती सीता आखिर अग्नि को सहोदरा मान परिक्षा में सफल होती है ,किन्तु स्त्री होने के अवसाद से भर जाती है और छाले उनके पैरों की बजाय मन पर पड़ जाते हैं। यहीं दाम्पत्य जीवन की पहली गाँठ पड़ जाती है ।

इस भाग में स्त्रीत्व को क्षणिक आवेग और मातृत्व को शाश्वत मानना,राम में नव रसों का संचार,बाली-सुग्रीव-तारा प्रसंग ,वीतरागी भरत के प्रति पूर्व वत भाव ,सीता को यातु विद्या का ज्ञान होना और अंत में राम द्वारा बिना बताये सीता का निष्काशन ,वाल्मीकि आश्रम में सीता का सशर्त आश्रय स्वीकार करना,सीता द्वारा आशा और आनंद का चयन किया गया है ।

आश्रमोत्सव में सीता द्वारा अपने परिजनों की संवेदना को अस्वीकार कर सीता यह निर्णय करती हुई –"अब किसी की चिंता नहीं करूँगी,न राम की न अपनी।" अपने गर्भ में पल रहे शिशुओं को राम से बेहतर बनाने का संकल्प लेती है। यहाँ राम के पूर्वज समवेत स्वर में सीता से राम की भूल के लिए क्षमा माँगते हुए इक्शावाकू वंश को दण्डित न करने की प्रार्थना करते हैं ।यहाँ लेखिका फिर से नारी के उद्दात भावों का दिग्दर्शन कराती है। इस बीच शिशुओं का जन्म,मंगल गान।

गुरुवार सीता को जगज्जननी मान विनती करते हैं –"मेरी लेखनी में अपने हृदय का करूँ रस भर दो ताकि मैं उसे पूर्ण कर सकू" (२४५) वे श्री राम को क्षमा करने की याचना करते हुए कहते हैं यदि तुम क्षमा नहीं करोगी तो आने वाले समय में कोई पत्नी ऐसे कार्य के लिए अपने पति को क्षमा नहीं करेगी (२४५)" लेखिका नारी को उदात्त भूमि पर प्रतिष्ठित करने के साथ राम को भी पूर्ण पुरुष बनाने की

कामना करती हैं ।यहाँ वे गुरुवार से कहलवाती हैं की -माँ बन कर तुम पूर्ण हो गई हो और तुम्हें खो कर राम अधूरे"(२५२) और सीता द्वारा आश्रय दाटा होने के कारण क्षमा करने की सहज स्वीकृति दिखाई गई है।

लव कुश को रामायण पाठ की शिक्षा ,निरंतर उनके प्रश्न प्रति प्रश्नों से सीता का विचलन की 'कहीं उनके मन में राम के जीवन प्रसंगों का गहरा प्रभाव बालकों के संतुलित विकास में बाधक न हो।(२६०)'संतान के प्रति माँ की चिंता का प्रकटीकरण एवं विकास में पिता की तुलना में माँ की भूमिका श्रेष्ठ बतलाई है।

शत्रुघ्न का आगमन सीता की शंका –'मैं उनसे भिन्न हो गई इसलिए पुन:अभिन्न होने का प्रश्न ही नहीं उठाता"(२६५) यहाँ लेखिका सीता के आत्म सम्मान की रक्षा करती प्रतीत होती है ।लोकरंजन के प्रश्न को राज धर्म बता कर लेखिका ने स्त्री स्वाभिमान की अवहेलना का प्रश्न उठाया है।"राम से उच्च आसन मुझे चाहिए ही कहाँ था" राम को अपने निर्वासन के लिए क्षमा कर मैं उनके सामने अपनाबड़प्पन नहीं दिखाना चाहती" सीता से यह कहलवा कर लेखिका भारतीय नारी के उच्चादर्श को स्थापित करती है ।

मातृ उत्सव में राम द्वारा सीता स्वरोपा स्वर्ण की सजीव मूर्ती के समक्ष क्षमा याचना और प्रजा रंजन के कारण अपनी नीति धर्मी,सती,प्राणप्रिया का त्याग जैसी विडम्बना पर मूर्छा पुरुष के पश्चाताप का प्रकटीकरण है ।

सीता त्याग करने की बात कहलवा कर लेखिका ने समाज में उच्च आदर्शों की स्थापना में नारी को ही मूल हेतु बताया है।

नेमिषारण्य से लौटते समय सीता से –"मूंडे मुंडे मतिर्भिन्ना" कहलवा कर लेखिका यह जताना चाहती है की राजा को निर्णय करने से पूर्व विचार करना चाहिए,निरंकुश नहीं होना चाहिए ।लव-कुश को देख कर कौशल्या का मूर्छित होना ,माँ सीता की मूती देख बालकों का विकल होना,सीता का सशंकित होना की कहीं गुरु हाथ के सामने झुकना न पड़े,'निर्जीव पत्नी को वामांग में बैठा कर उन्हें मेरे जीवंत व्यक्तित्व की क्या आवश्यकता? मेरे अयोध्या लौट जाने पर राम की दोस्त्रियाँ हो जायेंगी,क्या राम ने यह मान लिया की मैं प्रस्तर हो जाउंगी" कह कर सीता स्वयम को राम द्वारा प्रस्तर समझ लेना अपने लिए हितकारी बताती है।यहाँ लेखिका की तार्किक शक्ति परिलक्षित होती है।सीता राम के दुःख को स्वयम के दुःख से बड़ा बताती है कीर "वे राजा हो कर भी टिल टिल रैंक होते गए परन्तु मैनें जीवन में पाया हि पाया है।" यहाँ लेखकीय मंतव्य स्त्री सापेक्ष है।

दोनों पुत्रों का गायन सुन राम का उन्हें पहचानना,सीता को पुन: बुला कर अपनी शुद्धता सिद्ध कर स्वयम को निर्वासन के कलंक से मुक्ति की कामना ,बालकों का भावुक संवाद-"पिता की छत्रच्छाया के बिना रहा जा सकता है ,माँ के आँचल की छाया के बिना नहीं"(२८७)में लेखिका ने माँ के आसन को पिता से बहुत उंचा कर दिया है ।

विभिन्न द्वंद्वों के बावजूद सीता द्वारा पुत्र हित में स्वयम के स्वाभिमान को त्याग कर नेमिषारण्य की और प्रस्थान के साथ इस अंक की इति।

इस उपन्यास का अंतिम भाग महाप्रयाण अत्यंत मार्मिक ,हृदयग्राही होने के कारण इस कथा का प्राण है।जिसमें एक और सीता अपनी सास द्व्रा भिजवाये वस्त्राभूषण पहनने के आदेश की यह कह कर अस्वीकार करती है की "सोने की सीता ने रेशमी आभूषण एवं वस्त्र पहन रखे हैं---सोने की हि सही एक पत्नी व्रती राम ने पत्नी की दूसरी काया तो बनवाई---संभवत: उसमें प्राण प्रतिष्ठा भी करवा लें" उक्त कथन सीता की टीस की पराकाष्ठा है |

सीता के शरीर में विशेष शक्ति का आना ,मन कठोर,चित्त शांत,हर्ष-विषाद से परे मानों ज्वार भाता की नाइ उठाते-गिरते भावों ने मन और शरीर को वज्र बना दिया।

सीता द्वारा राम की छवि देखने की उत्सुकता का न होना तथा प्रतिमा का रूप स्वयं की पुष्प वाटिका में राम से भेंट के बाद तडाग में देखि अपनी छवि के सामान देखना और यह सोचना की संभवत: राम को निर्वासन के समय की छवि स्वयं के कलंकित होने का कष्ट देती होगी \सीता को राम स्वार्थी व सीता के दुःख की बजाय अपने दुःख में अधिक कातर नजर आते है \अंतत: सीता का विजयी भाव जहाँ वे माँ पार्वती से मांगी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ती हि उन पर विजय मान कर घोषित करती है"मैं पृत्वी पुत्री ----" सीता के अन्तर्धान होने पर राम के कुल के तेजस की परिणति का विलाप में बदल जाना ,अपनी भूल का अहसास होना और सीता का व्यक्तित्व विराट होकर जन समूह में समा जाना दिखा कर लेखिका ने स्त्री व्यक्तित्व की विराट धर्म परयानता व स्त्री अस्मिता की रक्षा को मुखरित किया है\जहाँ सीता गुरुवार की आज्ञा मान कर नेमिशार्न्य आती तो अवश्य है किन्तु राम से नेत्र मिलन व अंगीकार करने से पूर्व हि स्वयं के व्यक्तित्व को घुला देती है\यहाँ लेखिका का मंतव्य यह है की स्त्री पति,गुरुजनों व माता पिता की अवहेलना न करके भी अपने धर्म,आत्मसम्मान एवं अस्मिता की रक्षा करने में सक्षम है\

निष्कर्षत: लेखिका स्त्री अस्मिता को स्थापित करने के लिए सीता के बाल रूप,किशोर वय ,मिथिलेश्वरी ,राम की सहचरी,अयोध्या की लाडली पुत्र वधु ,तापसी,प्रकृति प्रेमी,भूमिजा,वास्तुविद वैदेही से आत्मबल युक्त अपने अंतस में असीम वेदना छिपाए लक्ष्योंमुखी ,पर दुःख कातरता का भाव लिए संकल्पशील नारी के रूप में स्थापित करने में सफल सिद्ध हुई है \

सीता पुनि बोली उपन्यास का वैशिष्ठ्य राम कथा में माँ सीता के चरित्र को उभार कर भारतीय स्त्री जाति को आत्मबल ,आत्मसंयम और स्वाभिमान का अद्भुत पाठ पढ़ाने में है \प्रत्येक भारतीय नारी की आदर्श सीता है\लेखिका ने पौराणिक स्त्री पात्र सीता के जीवन चरित्र को आत्म कथ्य शैली में प्रस्तुत कर इसके कलेवर में भारतीय भाव बोध की युगीन अनुभूति और संवेदना को लेखनी दी है \

जनमानस में आदर्श भारतीय जीवन मूल्यों की स्थापना करके सीता की आत्मकथा और मूल्य बोध के बहाने स्त्री परिवार ,समाज,सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय चेतना और युगीन नारी समस्याओं को मुखरित

किया है\परन्तु स्त्री चरित्र को उत्कृष्ट आसन पर बैठाने के लोभ में लेखिका रामायण के कतिपय प्रसंगों के साथ न्याय नहीं कर पाती\जहाँ राम को वनवास का आदेश होता है वहाँ राजा दशरथ का विलाप न दिखा कर प्रसंग को ह्रदय शून्य कर दिया \चित्रकूत प्रसंग जहाँ मानस का ह्रदय कहलाता है,तुलसी जी वहाँ अपना ह्रदय निचोड़ कर रख देते हैं उसे लेखिका बड़ा हि सामान्य तरीके से प्रस्तुत करती हैं \सीता निर्वासन के प्रसंग को ह्रदयग्राही बनाने का बहुत स्थान शेष रह गया है\

यह औपन्यासिक कृति हिंदी साहित्य के नारी विमर्श वांग्मय में विशिष्ट स्थान रखेगी \यह कृति नारी के पतिव्रत धर्म का निर्वहन कर क्षमाशीलता का पाठ पढ़ाने ,मानव मात्र में आत्म बल का संचार करने,शील व मर्यादा के कवच में रहने,प्राणी मात्र को कर्तव्य बोध का पाठ पढ़ाने ,एवं द्दढ संकल्पि मानव जीवन को एक तपस्वी की भाँती जीने वालों के लिए पथप्रदर्शक का कार्य करेगी \